JULIA DONALDSON • AXEL SCHEFFLER
बंदर पहेली

"मेरी माँ खो गई है!"

"रोओ मत, चुप हो जाओ, छोटे बंदर,
मैं माँ को ढूंढने में तुम्हारी मदद करूंगी," तितली ने कहा.
"अच्छा यह बताओ. तुम्हारी माँ कितनी बड़ी है?"
"वो काफी बड़ी है!" बंदर ने कहा. "मुझ से बड़ी."
"तुमसे बड़ी? फिर मैंने तुम्हारी माँ को ज़रुर देखा है.
आओ, छोटे बंदर, चलो मेरे साथ."
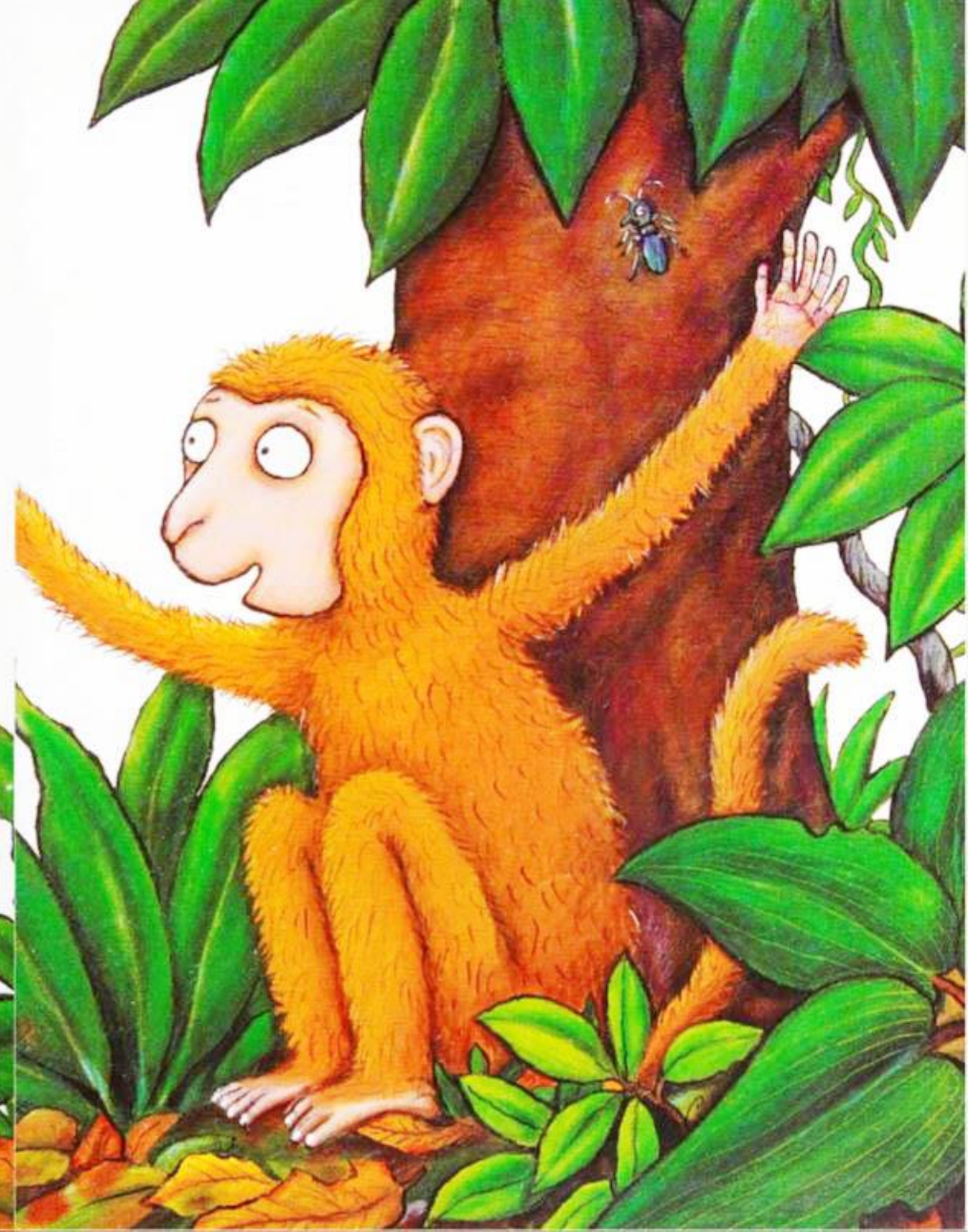
"नहीं, नहीं, नहीं! वो तो एक हाथी है.
"मेरी मां इतनी बड़ी और सिलेटी नहीं हैं.
माँ के बड़े दांत और मुड़ी सूंड भी नहीं हैं.
उसके घुटने एकदम मोटे, ढीले-ढाले नहीं हैं.
मेरी माँ की पूँछ पेड़ों के चारों ओर घूमती है."
"वो पेड़ों के तनों को अपने हाथों से पकड़ती है?”
“तो फिर वो बहुत पास है.
जल्दी करो छोटे बंदर! तुम्हारी माँ यहाँ पर है."
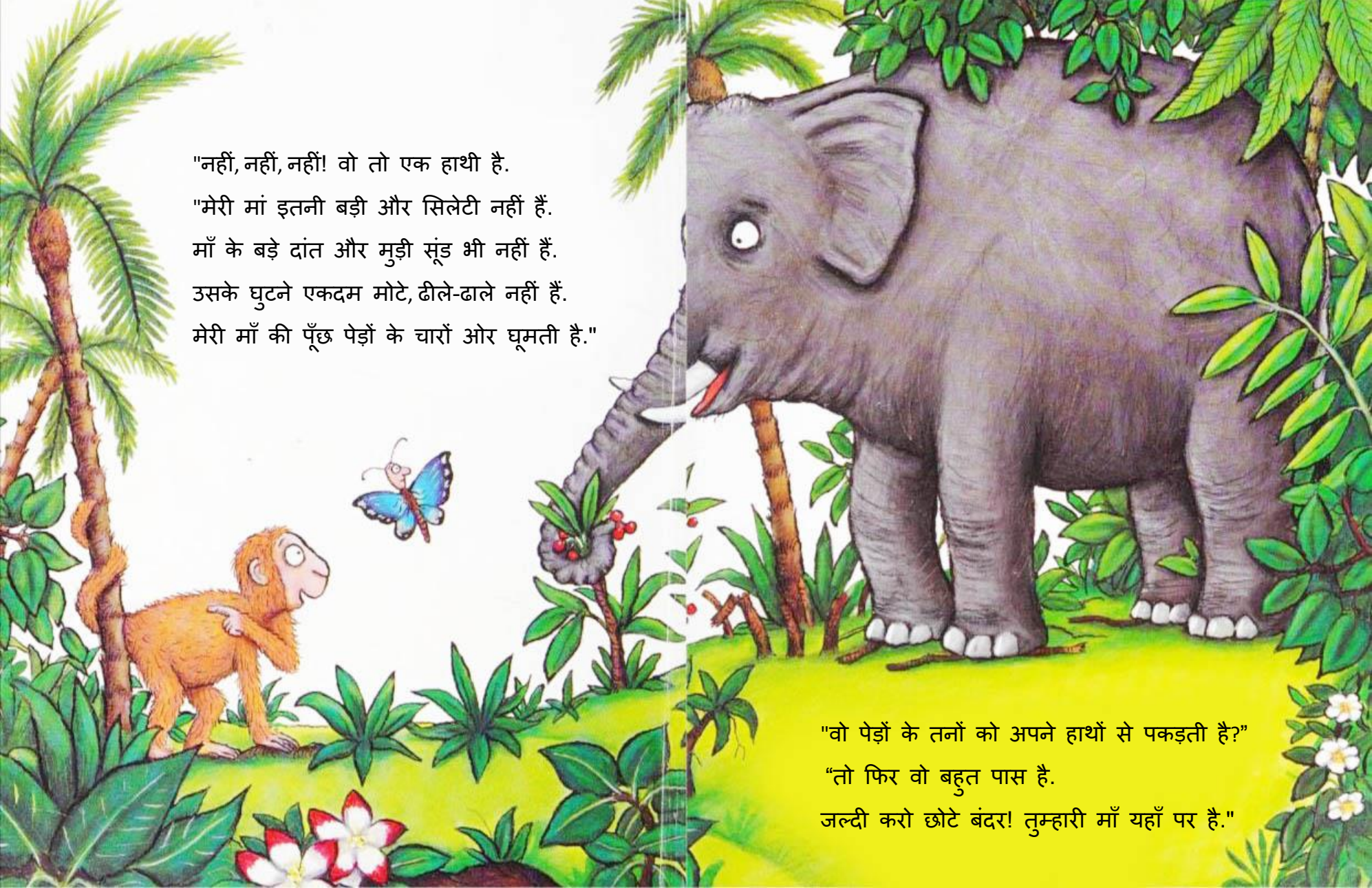
"नहीं, नहीं, नहीं! वो तो एक साँप है.

"मेरी माँ बिल्कुल वैसी नहीं दिखती है.

वो इठलाती हुई नहीं चलती है और
फुफकारती भी नहीं है.

वो अंडों के घोंसले के चारों ओर कुंडली
नहीं मारती है.

देखो, मेरी माँ के पैर भी हैं."
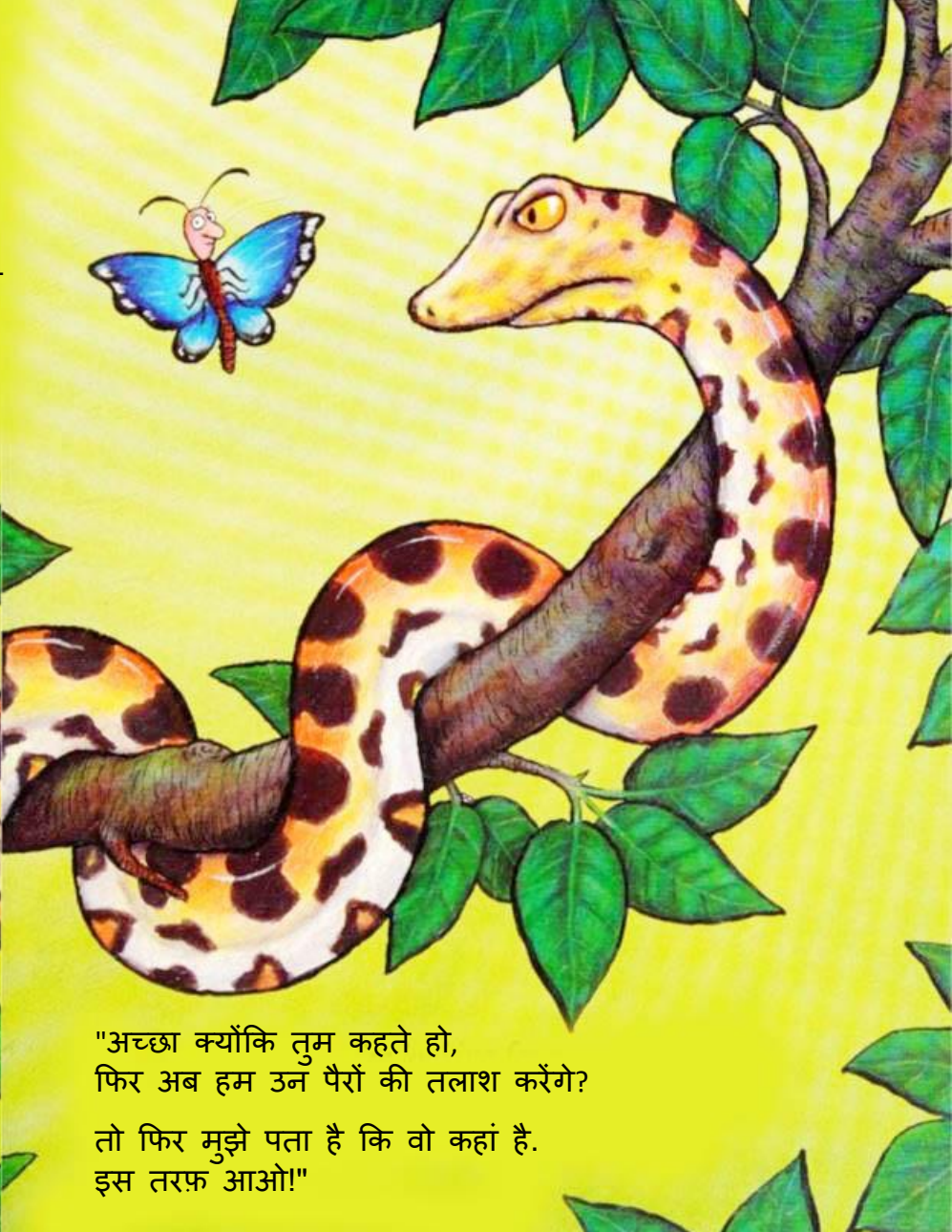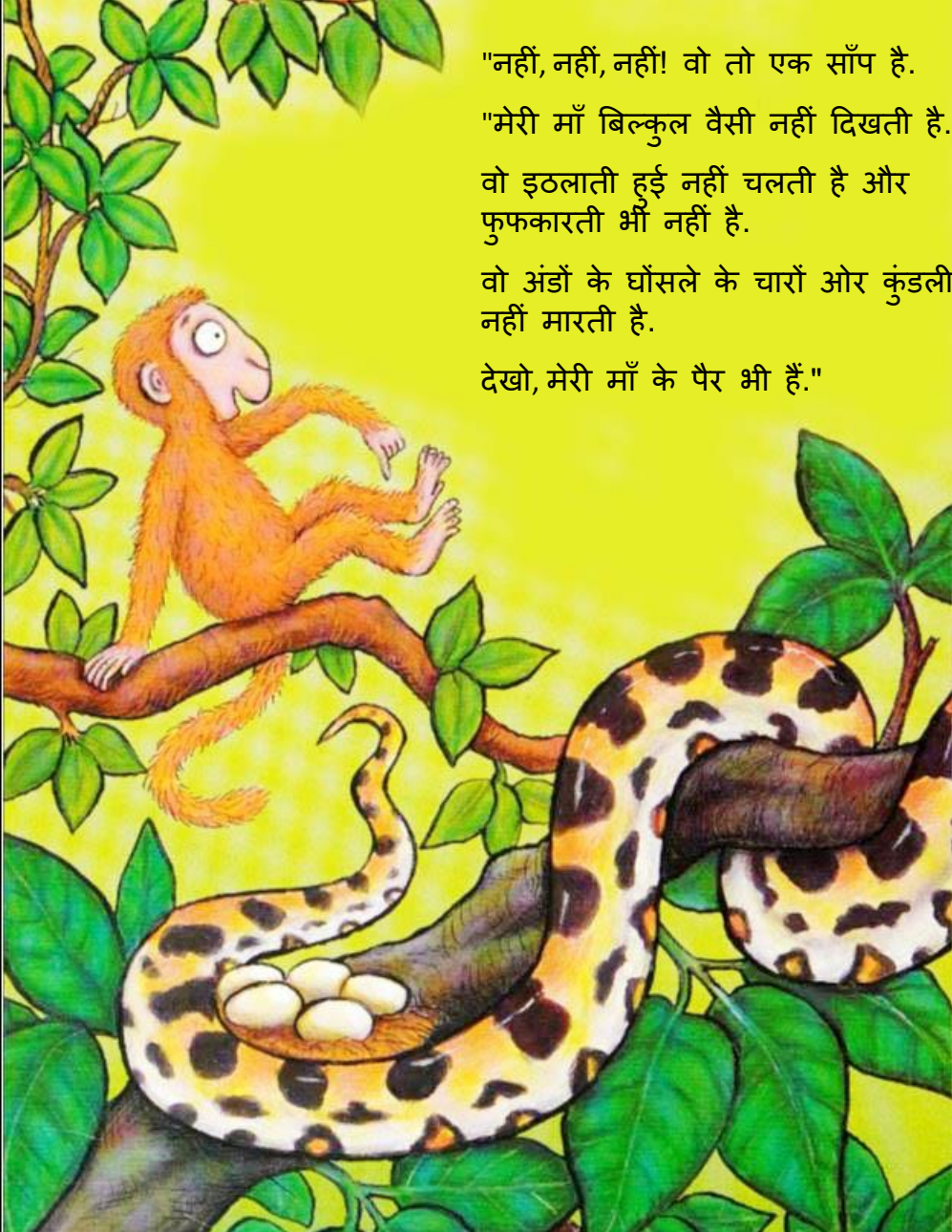
"अच्छा क्योंकि तुम कहते हो,
फिर अब हम उन पैरों की तलाश करेंगे?

तो फिर मुझे पता है कि वो कहां है.
इस तरफ़ आओ!"

"नहीं, नहीं, नहीं! वो तो एक मकड़ी है.

"मेरी माँ वैसी काली, बालों वाली और मोटी

नहीं है. माँ के उतने पैर भी नहीं हैं!

वो मक्खी निगलने के बजाए फल खाना
पसंद करती है,

मेरी माँ ऊँचे पेड़ों की चोटी पर रहती है."

"वो पेड़ों में रहती है?
यह तुम्हें पहले बताना चाहिए था!"
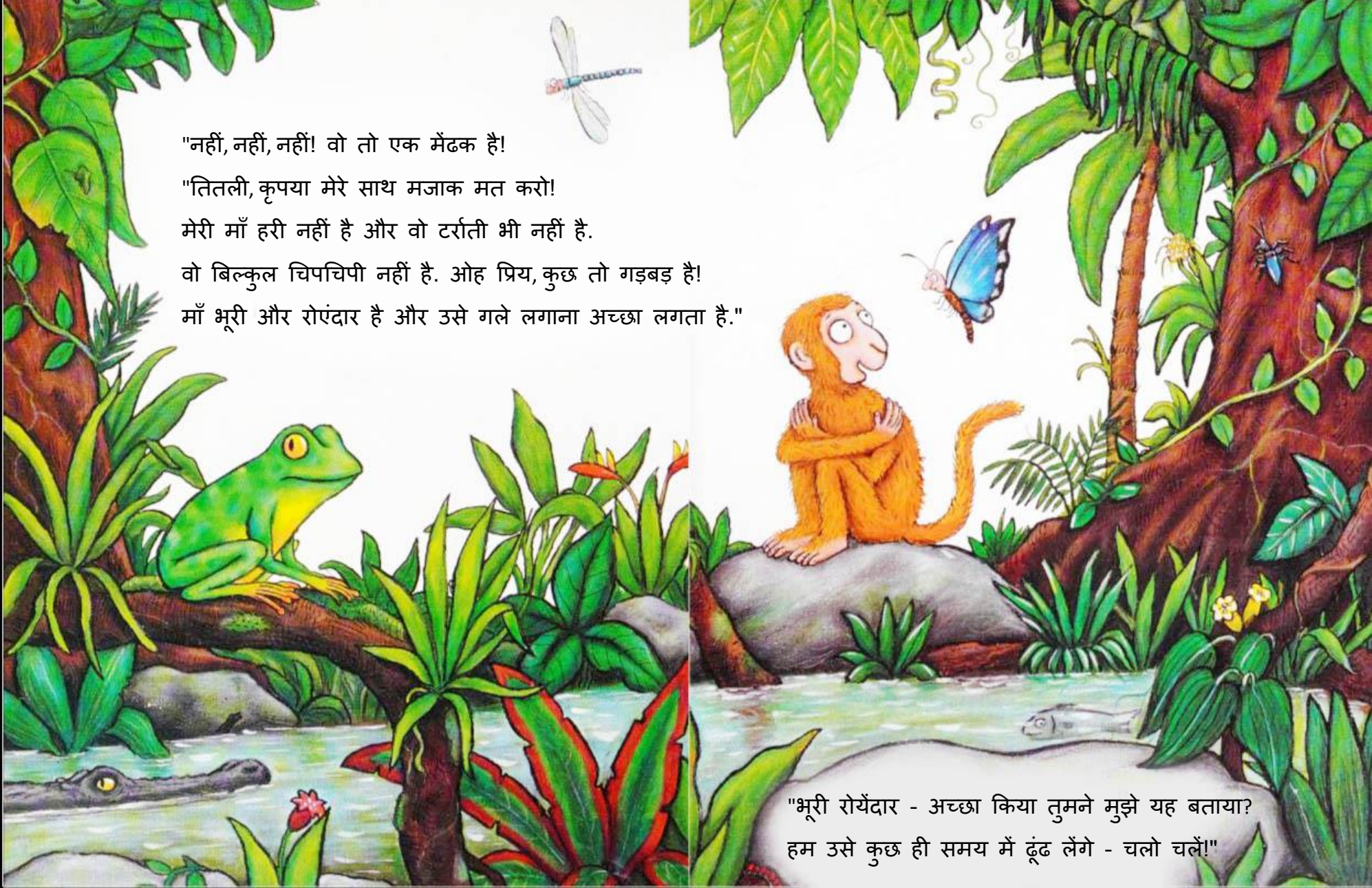
देखो, तुम्हारी माँ तुम्हारे
सिर के ऊपर छिपी हुई है"
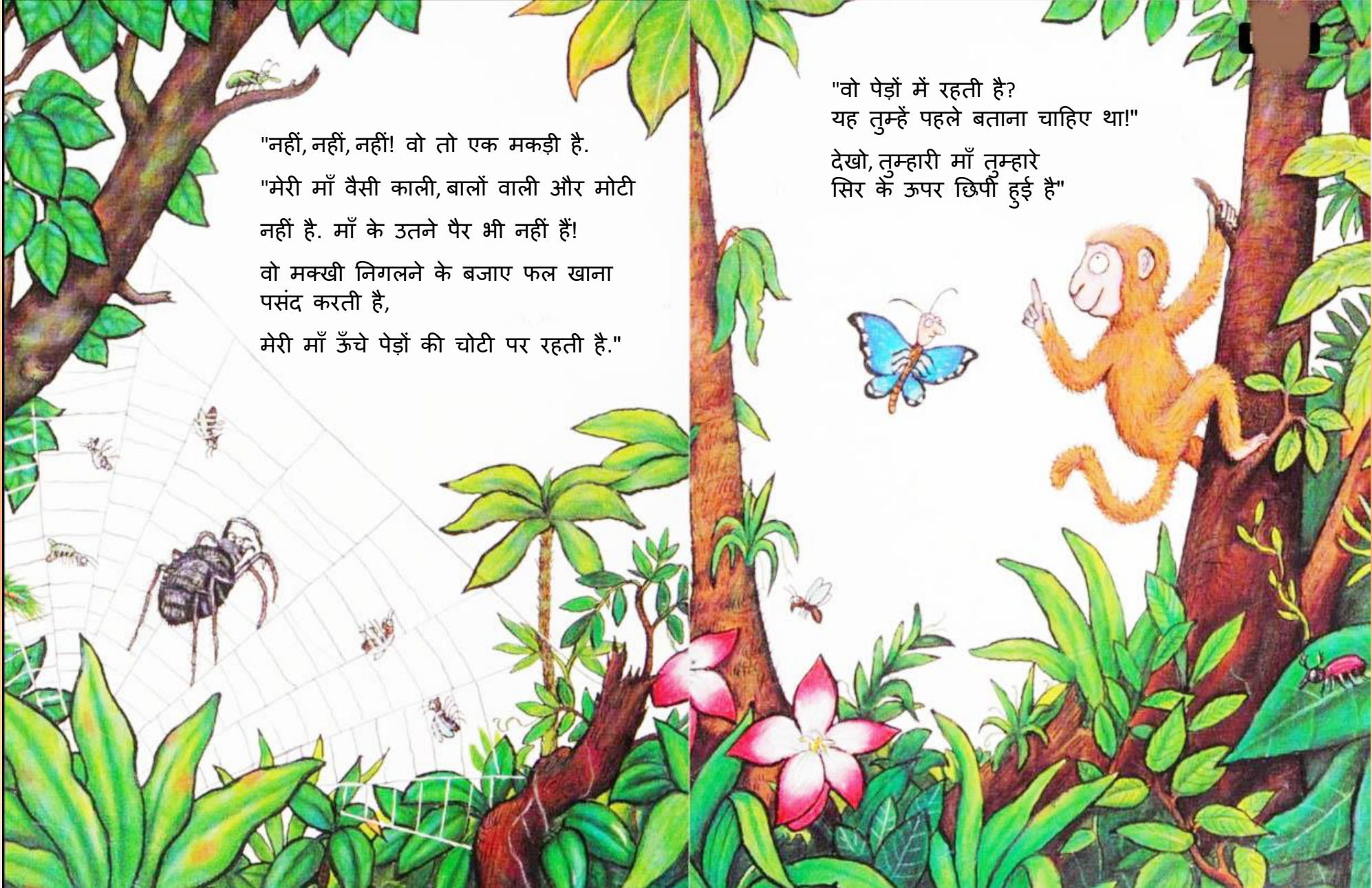
"नहीं, नहीं, नहीं! वो तो एक तोता है."

"मेरी माँ की नाक है, चोंच नहीं.

वो चीखती-चिल्लाती, और टें-टें नहीं करती है.

उसके पंजे और पंख भी नहीं हैं.

देखो मेरी माँ हमेशा उछलती-कूदती रहती है."
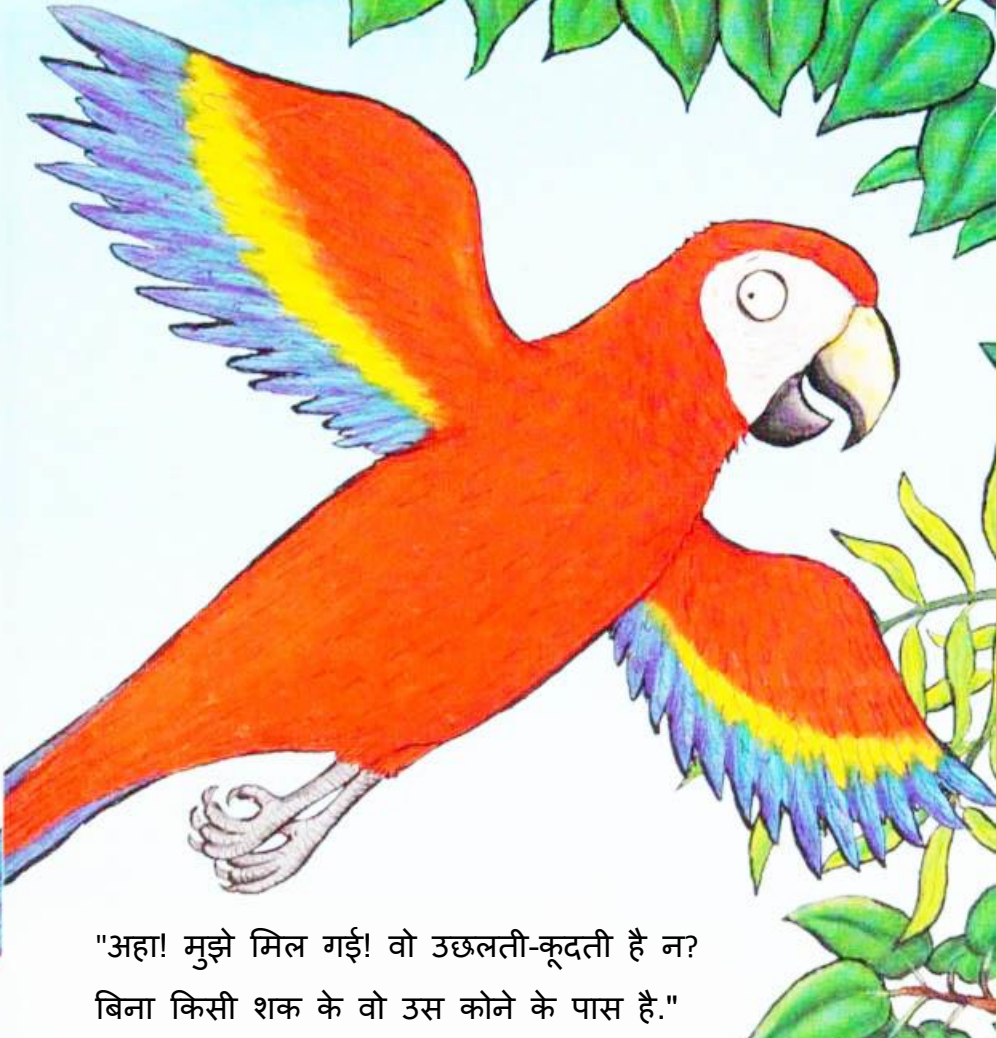
"अहा! मुझे मिल गई! वो उछलती-कूदती है न?

बिना किसी शक के वो उस कोने के पास है."

"नहीं, नहीं, नहीं! वो तो एक मेंढक है!
"तितली, कृपया मेरे साथ मजाक मत करो!
मेरी माँ हरी नहीं है और वो टर्राती भी नहीं है.
वो बिल्कुल चिपचिपी नहीं है. ओह प्रिय, कुछ तो गड़बड़ है!
माँ भूरी और रोएंदार है और उसे गले लगाना अच्छा लगता है."
"भूरी रोयेंदार - अच्छा किया तुमने मुझे यह बताया?
हम उसे कुछ ही समय में ढूंढ लेंगे - चलो चलें!"

"अरे नहीं! वो तो एक चमगादड़ है.
"तुम हर बार मेरी बात ग़लत क्यों समझती हो?
मेरी माँ दिन में इस तरह नहीं सोती है.
मैंने तुमसे कहा था, माँ के पंख भी नहीं हैं,
और वैसे भी, मेरी माँ इतनी छोटी नहीं है!"
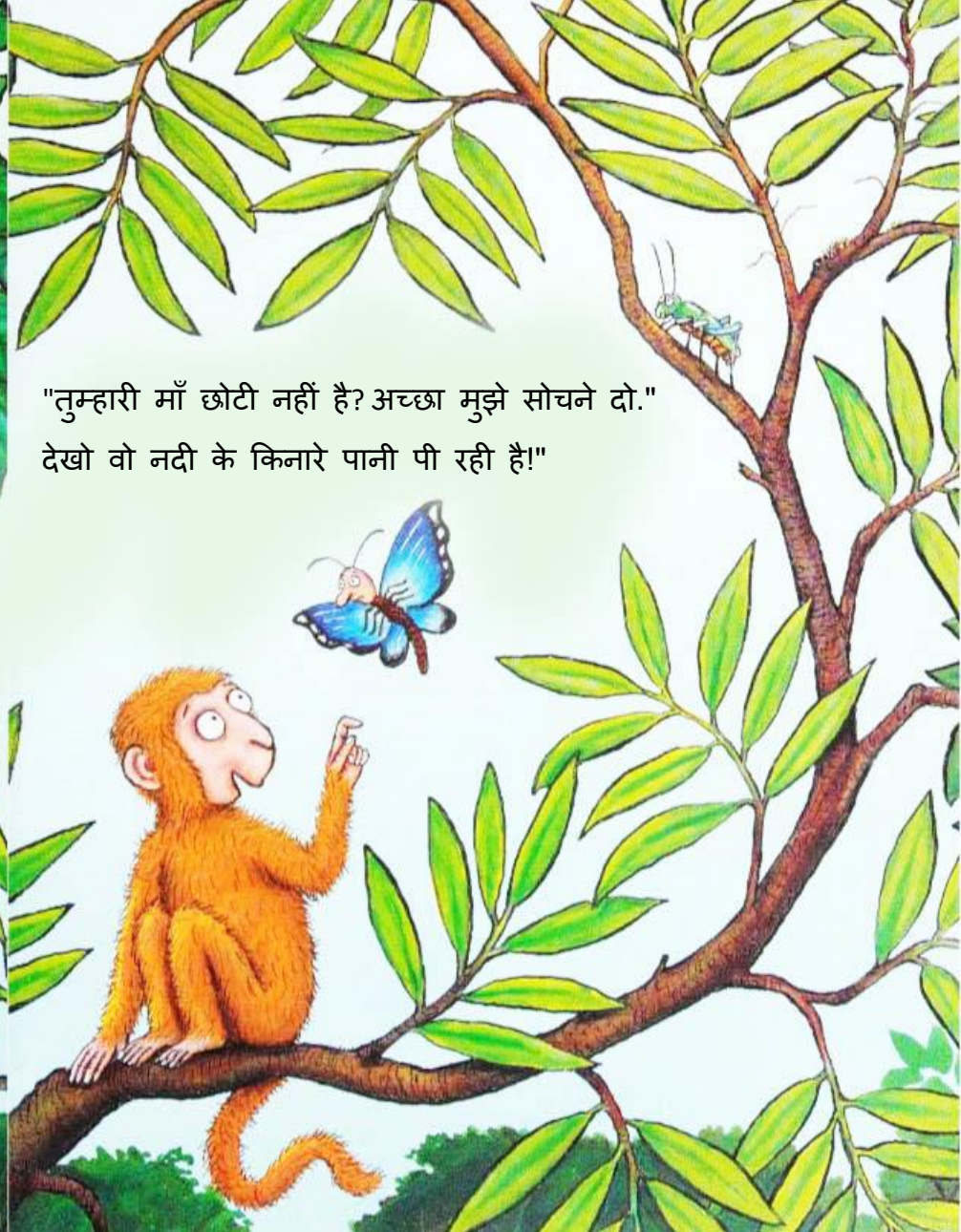
"तुम्हारी माँ छोटी नहीं है? अच्छा मुझे सोचने दो."
देखो वो नदी के किनारे पानी पी रही है!"

"नहीं, नहीं, नहीं!
वो तो फिर से हाथी है!"
"तितली, तितली, क्या तुम देख नहीं सकती हो?
उनमें से कोई भी जीव मेरे जैसा नहीं दिखता है!"
"तुमने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि तुम्हारी माँ,
तुम्हारी तरह ही दिखती है!"
"बेशक, मैंने नहीं कहा! मुझे लगा कि वो तुम्हें पता होगा!"
“मुझे नहीं पता था! ज़रा समझो...
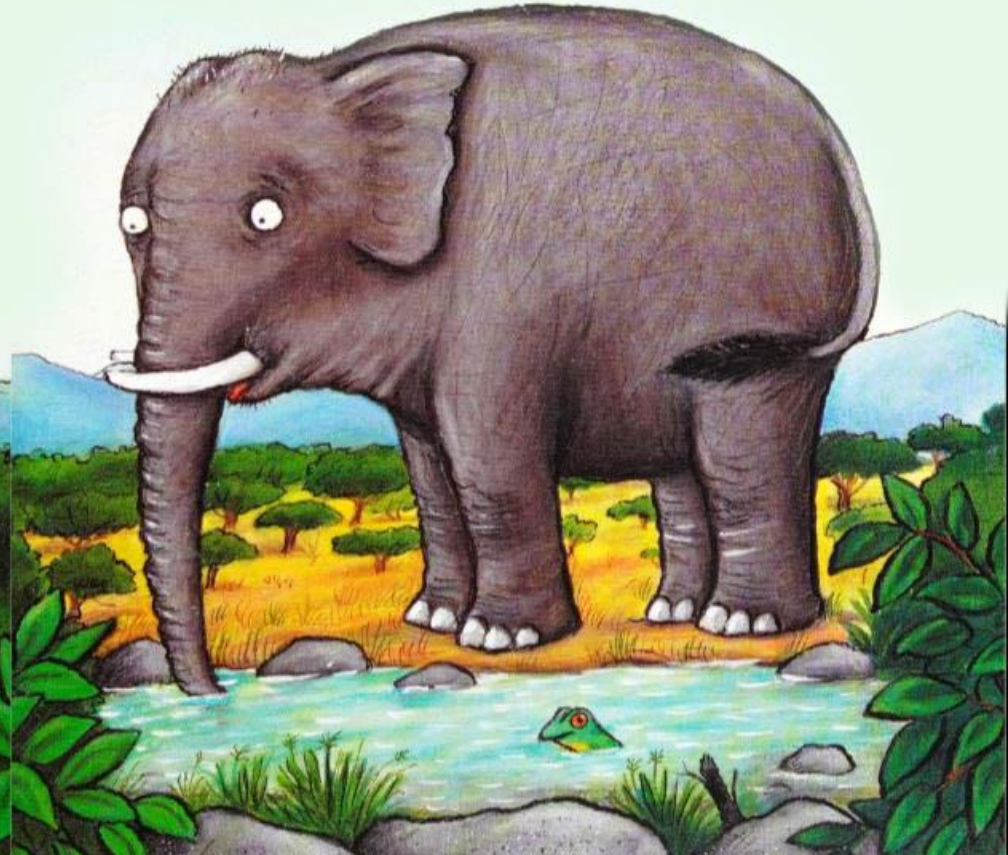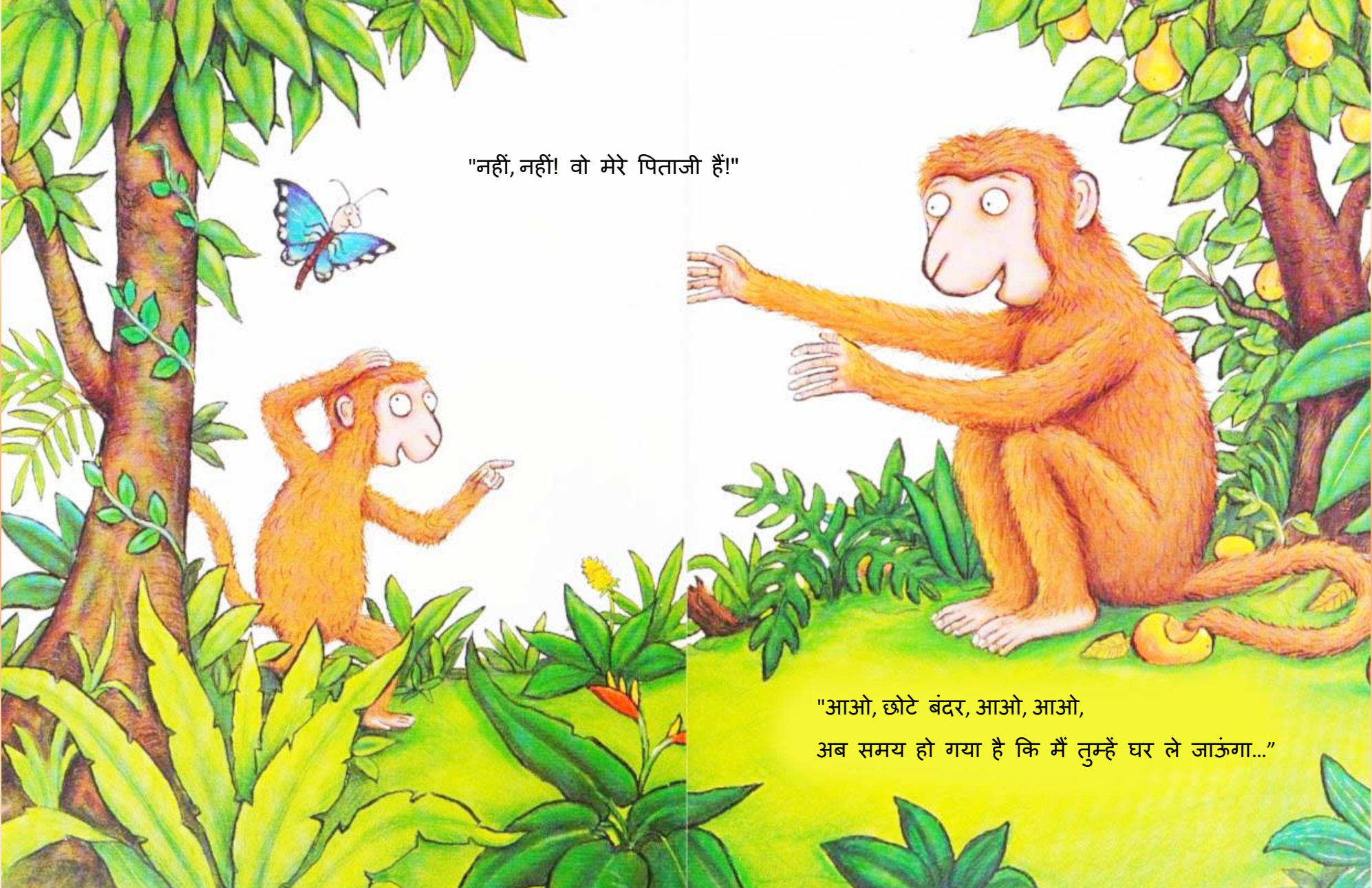
"..देखो मेरा बच्चा बिल्कुल मेरे जैसा नहीं दिखता है.

तो, माँ तुम्हारी तरह दिखती है! अगर ऐसा है

तो हम जल्द ही तुम्हारी माँ के छिपने का
स्थान पता लगा लेंगे."
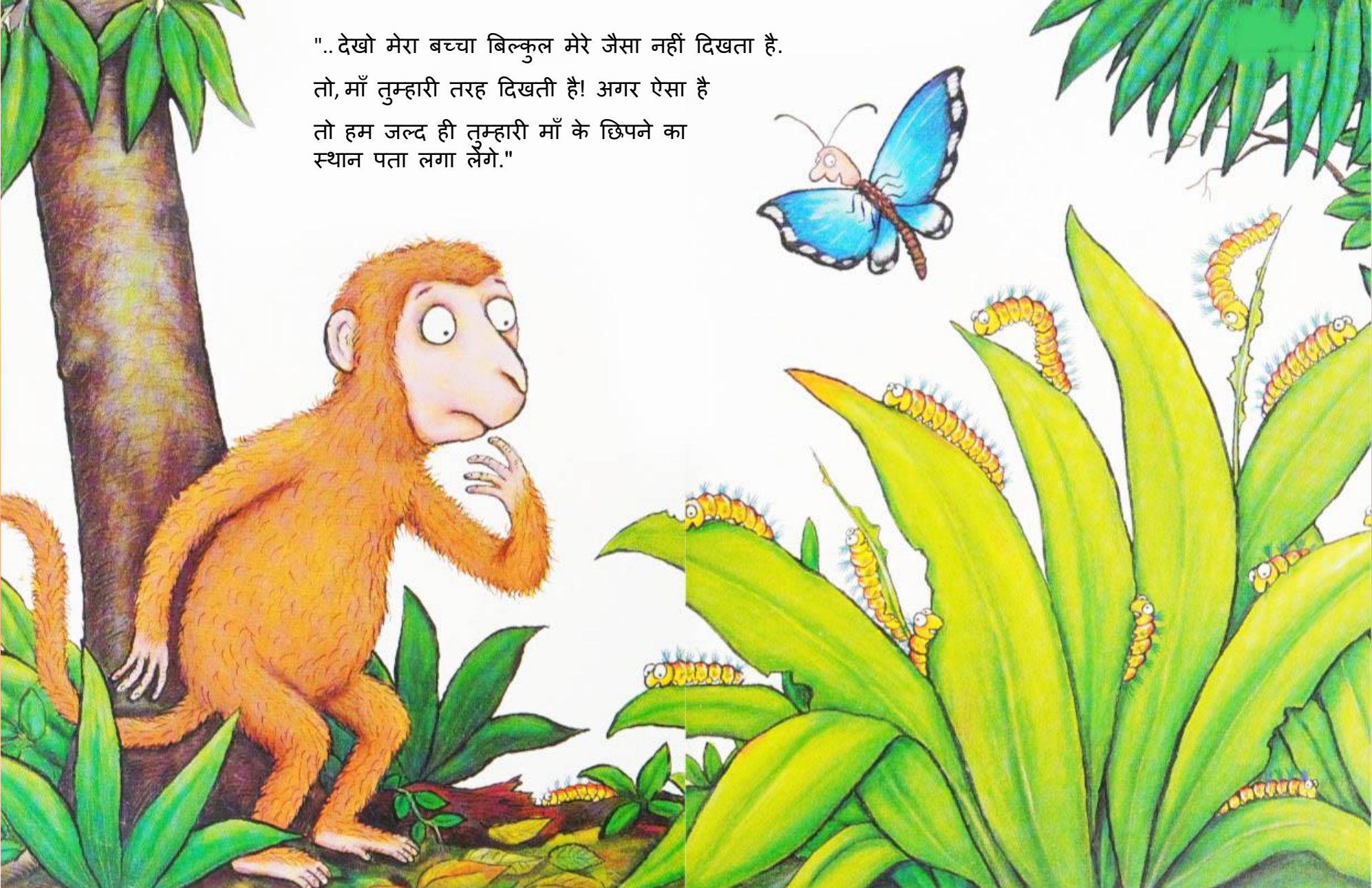
"नहीं, नहीं! वो मेरे पिताजी हैं!"
"आओ, छोटे बंदर, आओ, आओ,
अब समय हो गया है कि मैं तुम्हें घर ले जाऊंगा..."

"तुम्हारी माँ! के पास."
अंत